बच्चों के शिक्षकों एवं उनके सहयोगियों से संबंधित निर्देश

प्रारम्भ करना

"प्रिय प्रभु परमेश्वर, जिन बच्चों से आप अत्यधिक प्रेम रखते हैं, मेरी सहायता कीजिये कि उन्हें पढ़ाने से पहले, मैं भलीभांति तैयारी कर सकूं।"

1. पौलुस-तिमुथि पाठ्यक्रम की बच्चों से संबंधित अध्ययन-सामग्री का प्रयोग कीजिये।

- पौलुस-तिमुथि पाठ्यक्रम में अनेक पाठ दिए गये हैं जो चरवाहों तथा बच्चों के शिक्षण से संबंधित हैं। जो सामग्री बच्चों से संबंधित है, उनके उपर लिख दिया गया है कि वह बच्चों के लिये है।
- बच्चे भी वही बातें सीखते हैं जो वयस्क सीखते हैं।
- पी०टी० अध्ययनमाला बच्चों को इस योग्य भी बनाती है कि वे समय से पहले विषयानुसार बाइबल-कथा तैयार कर सकें ताकि वयस्क भी शिक्षा ले सकें। आराधना-सभा के मध्य बच्चे वयस्कों के लिये ऊस बाइबल कथा के अनुसार नाटक भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

2. अध्ययन-सामग्री से ऐसी गतिविधि का चुनाव कीजिये जो आपके बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप हो।

- बच्चों से संबंधित अध्ययन में अनेकों गतिविधियां प्रस्तुत की गई हैं। उनमें कुछ ऐच्छिक गतिविधियां भी दी गई हैं। उन्हीं गतिविधियों को प्रयोग में लाईए जो आपकी तत्कालिक आवश्यकताओं के अनुसार हों, तथा जिनके लिये आपके पास समय भी हो, शेष गतिविधियों पर ध्यान न दीजिए।

3. बच्चों की सभा में बच्चों को ही आराधना में प्रस्तुत करने के लिये सब बातों की तैयारी करने दीजिये।

- यदि बच्चे बहुत छोटे हों तो अनेक बच्चों को एक साथ सामने मंच पर खड़ा करवा कर उन्हें एक साथ बोलने या कोरस गाने का अवसर दिया जा सकता है।
- बच्चों से बाइबल पद सुनाने, लघु-नाटिका प्रस्तुत करने, कविताएं बोलने, गीत गाने तथा बाइबल का कोई संक्षिप्त अंश पढ़ने को कहा जा सकता है।
- कुछ बच्चे शर्मीले और शान्त स्वभाव के होते हैं, यदि उन्हें दूसरे बच्चों के साथ मिलकर कार्य करने का अवसर दिया जाए तो वे भी हिस्सा लेना सीख सकेंगे।

4. बच्चों को ऐसे सरल गीत गाने का अवसर दीजिये जिनकी स्वरलिपि लिखी हुई हो, ताकि वे जानें:

- पाठ में स्वरलिपि सहित ऐसे सरल गीत, जो बच्चों को पसन्द हों, जोड़ दीजिये।
- आप बड़े बच्चों को कह सकते हैं कि वे सप्ताह के विषय से संबंधित कविता की रचना करें जो संगीत के अनुसार उपयुक्त रहे।

5. छोटे बच्चों को हाथ बार बार हिलाने दें, व शारीरिक को हिलाने – डुलाने की अनुमति दें :

कहानी सुनाते समय या गीत गाते समय बच्चे हाथ–पैर हिलाना व उंगलियां मटकाना पसन्द करते हैं। उदाहरणार्थ : उन्हें वह कहानी बताने का अवसर दीजिये कि दाउद ने गोलियत को कैसे मारा?

- जब गोलियत इस्राएली सेना की निन्दा कर रहा था, तो बच्चे हवा में अपने मुक्के दिखाते हैं।
- जब दाऊद गोफन में रखकर पत्थर फेंकता है, तो बच्चे अपने हाथ से संकेत करते हैं जैसे वे भी गोफन में रखकर पत्थर फेंक रहे हों।
- जब गोलियत भूमि पर गिर पड़ता है, तो बच्चे भी गिरकर करहाते हैं। इत्यादि।
- छोटे बच्चे आवाज़ें तथा किसी काम को दोहराना बहुत पसन्द करते हैं। जैसे :यदि आप या वे बच्चे नेक सामरी की कहानी सुना रहे हों, तो गधे की आवाज़ बोलिये और सराये में प्रवेश करते समय उसके खुरों की आवाज़ कीजिये, वे इसे पसन्द करेंगे।
- आदम–हव्वा की कहानी सुनाते समय, जब सर्प के बारे में बताया जाए तो उसकी फुसफुसाहट की आवाज़ बच्चों से कई बार उच्च स्वर में दोहराने को कहिए।

6. बड़े बच्चों को अवसर दीजिये की वे छोटे बच्चों को सिखाएं व उन्हें शिष्य बनाएंः

- बड़े बच्चों को समझाएं कि वे क्या कुछ कर सकते हैं
- सरल कार्य उन्हें दीजिये, एक समय में एक काम करने को कहें।

7. बच्चों को वयस्कों के साथ मिलकर आराधना करने की अनुमति दीजियेः

- जहां तक संभव हो, बच्चों को सम्मिलित करके आराधना के मध्य पारिवारिक वातावरण की भावना निर्मित करने का प्रयत्न कीजिये।
- बच्चों से संबंधित पाठ में वे सब बातें पाई जाती हैं जिन्हें बच्चों व वयस्कों को तैयार करके आराधना के मध्य प्रस्तुत करना चाहिये।
- अच्छी तरह उन सब बातों की तैयारी कराएं तथा सबसे पहले उनको बच्चों की मीटिंग में प्रस्तुत कीजिये।

8. छोटे समूहों में बच्चों की बातें ध्यानपूर्वक सुनें और मसीह में उन्नति करने में उनकी सहायता करेंः

- पी०टी० अध्ययनमाला में मुख्य आराधना के मध्य तीन से पांच व्यक्तियों का छोटा समूह बनाने का प्रावधान है, ताकि लोग आपस में बात कर सकें और प्रार्थना कर सकें। ऐसे कुछ समूहों में बच्चों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- कुछ वयस्कों को नियुक्त कीजिये जो ऐसे छोटे प्रार्थना समूहों में बच्चों से बातें कर सकें और उनके साथ मिलकर प्रार्थना कर सकें।
- ऐसा बाइबल अध्ययन कक्षा के बाद कीजिये ताकि आप उनसे प्रश्न कर सकें और अपने विचार प्रस्तुत कर सकें।
- नया नियम में हमसे अपेक्षा की जाती है कि जब भी हम एकत्रित होते हैं तो विभिन्न प्रकार से एक दूसरे की सेवा करें, इसमें बच्चे भी सम्मिलित हैं। जब हम ऐसा करेंगे तो पवित्रात्मा प्रभावशाली रूप से कार्य करेगा।

9. जब आप छोटे समूहों में बच्चों से बातें करते हैं तो विचार करें कि आप किस प्रकार उनकी सहायता कर सकते हैं:

- इस प्रकार के प्रश्न उनसे पूछे जा सकते हैं जैसे– इस कहानी में कौन से व्यक्ति आपको पसन्द है और क्यों पसन्द हैं?
- क्या आप उसके समान बनना चाहते हैं? यदि हां, तो आपको क्या करना पड़ेगा?
- क्या आप के सामने घर पर, स्कूल में, या पड़ौस में कोई समस्या है, जिसके लिये हम प्रार्थना करें?
- अगले सप्ताह आप किस की सहायता कर सकते हैं या उस पर दया दिखा सकते हैं? आप क्या करेंगे?
- क्या आप कोई ऐसा काम बता सकते हैं जिसके द्वारा आप अपने माता–पिता को प्रसन्न करना चाहेंगे?
- अगले सप्ताह वह कौन सा एक काम करेंगे, जिसके द्वारा आप अपने भाई अथवा बहन को प्रसन्न करना चाहेंगे?

10. बच्चों को बाइबल की कहानी का नाटक प्रस्तुत करने की अनुमति दीजियेः

- बच्चों से संबंधित अध्ययन–सामग्री में लघु–नाटिकाएं भी सम्मिलित की गई हैं। बच्चे उन कहानियों पर आधारित नाटकों का अभ्यास सबसे पहले अपनी मीटिंग में कर सकते हैं, उसके बाद युवाओं की सहायता से अभ्यास किया जा सकता है। अन्त में वे उसे मुख्य आराधना सभा में प्रस्तुत कर सकते हैं।
- बच्चों को बाइबल की कहानियों को नाटक के रूप में प्रस्तुत करने में आनन्द आता है। इनके द्वारा वे बाइबल की आत्मिक सच्चाईयों को अच्छी तरह याद रख सकते हैं। वे अपनी कक्षा में अभ्यास नहीं करते क्योंकि अभ्यास करना एक सिखाने की गतिविधि है। ये नाटक उस समय प्रभावशाली हो सकते हैं जब वे संक्षिप्त व सरल हों और बच्चों को लम्बे वाक्य रटने को न कहा जाए।
- उदाहरणार्थ – बच्चों की सभा में जब कनानी मूर्तिपूजकों के साथ यहोशु के संग्राम के बारे में सिखाया जा रहा हो, तो शिक्षक कुछ बच्चों से कह सकता है कि वे यहोशु के सिपाही हैं, तथा अन्य बच्चों को वह कहानियों के सिपाही बना सकता है।
- यदि नाटक के लिये बच्चों की कमी हो जाए, तो पड़ौस के बच्चों को आमंत्रित किया जा सकता है अथवा उद्घोषक कहानी के पात्रों का परिचय दे सकता है और पढ़ सकता है।
- बच्चों को नाटक में क्या बोलना है, शिक्षक को यह बताना चाहिये, और बच्चों को वे वाक्य दोहराने के लिये कहना चाहिये, परन्तु अभिनय बच्चों को ही करने देना चाहिये। संभव है बच्चे उन वस्तुओं की खोज में शोर मचाते हुए इधर उधर दौड़ें, जिनका प्रयोग नाटक में किया जाएगा, जैसे तलवारें, भाले व ढालें, आदि। हो सकता है उन्हें शान्त करने में थोड़ा समय लग जाए, परन्तु इस प्रकार वे बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे ऐसे कार्य पसन्द करते हैं।
- प्रति सप्ताह आराधना सभा में बच्चों द्वारा इस प्रकार नाटक प्रस्तुत करने की व्यवस्था आराधना के संचालक की सहायता से करनी चाहिये।
- यदि आपके पास नाटक के लिए प्रर्याप्त बच्चे नहीं हैं तो पड़ौस के अविश्वासी बच्चों को सहायता के लिये आमंत्रित कीजिये, इस प्रकार उन्हें भी ख्रीस्त को ग्रहण करने का अवसर मिलेगा।

- जो बच्चे बड़ी आयु के हैं वे यदि नाटक के कथन याद न भी कर पाए, तो भी अच्छी तरह भूमिका निभा सकते हैं। पहले पहल तो उन्हें कठिन लग सकता है, पर बाद में उन्हें अपनी कल्पना द्वारा नाटक करना अच्छा लगने लगेगा। कुछ बच्चों को नाटक के कथन याद करना अच्छा लगता है। जो जैसा करे, करने दीजिये।

11. दृष्य वस्तुएं बनाएं या चित्र बनाएं जिससे स्पष्ट हो कि आप क्या सिखाना चाहते हैं।

- दृष्य वस्तुएंः जैसे, यदि आप सिखाना चाहते हैं कि यीशु जगत की ज्योति हैं, तो बच्चों को चाहिये कि वे जलती हुई मोमबत्ती हाथ में लेकर ऊपर उठाएं और ज्योति से संबंधित बाइबल पद बोलें या कविता प्रस्तुत करें।
- चिन्हों को प्रयोग करनाः उदाहरणः बोलते समय बच्चों को हाथों में तख्ती ले लेना चाहिये। जब वे बोलते हैं कि यीशु ने अंधें व्यक्ति को आंखें दीं, तो उन्हें वह तख्ती दिखाना चाहिये जिसपर लिखा हो, परमेश्वर प्रेम करता है। यदि आप चाहें तो तीन बच्चों को तीन तख्तीयां लेकर खड़ा कर सकते हैं,एक तख्ती पर लिखा हो परमेश्वर दूसरी तख्ती पर लिखा हो प्रेम तथा तीसरी पर लिखा हो करता है। इस प्रकार परमेश्वर प्रेम करता है, लोग पढ़ सकेंगे।
- दृष्यः उदाहरण - जब इस्राएल द्वारा सूखी भूमि पर लाल समुद्र पार करने की घटना के बारे में बताया जाए तो बच्चों को नृत्य द्वारा खुशी मनाने दीजिये तथा किसी बच्चे को वह बाइबल पाठ पढ़ने दीजिये जो मूसा व अन्य लोगों ने लाल समुद्र पार करने के बाद गाया था, जो निर्गमन १५ अध्याय में पाया जाता है। इसी प्रकार से बच्चे सर्प का चित्रण कर सकते हैं जबकि सर्प ने हव्वा को बहकाया था। इसे दर्शाने के लिये बच्चे एक लम्बी लाईन में खड़े हो सकते हैं, लम्बे बच्चे आगे रहें, फिर उससे छोटे पीछे रहें, इस प्रकार बच्चे अपने सामने के बच्चे को पकड़ कर पूरे कमरे में सर्प की तरह फुंकार मारते हुए घूम सकते हैं। इस प्रकार सर्प का चित्रण किया जा सकता है।

जो कुछ आपके पास उपलब्ध है, उन्हीं साधारण वस्तुओं का प्रयोग कीजिये। अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग कीजिये। साधारण वस्तुएं बाइबल के सत्य अच्छी तरह दर्शा सकती हैं। उन्हीं वस्तुओं का उपयोग कीजिये जो बच्चे प्रतिदिन देखते हैं। इन वस्तुओं को देखकर बच्चों को सहायता मिलेगी कि वे परमेश्वर का स्मरण कर सकें।उन्हें ऐसी दृश्य वस्तुओं का उपयोग करने दीजिये और उनके विषय में बातचीत करने दीजिये। उदाहरणः-

घास - बीज बोने वाले किसान का दृष्टान्त

चटटानों पर बने हुए चेहरे - भृकुटी चढ़े हुए चेहरे दुखी लोगों के, तथा भले लोगों के मुस्कुराते चेहरे।

हरी पत्तियां - धन्य लोग ऐसे वृक्षों के समान होते हैं जो नदी किनारे उगे हों। (भजन संहिता १)

मुरझाई हुई पत्तियां - यीशु ने फलरहित अंजीर के वृक्ष को श्राप दिया। (मरकुस ११:१२-२४)

झाडू - पवित्रात्मा हमारे जीवन से पाप दूर कर देता है।

साबुन - खीस्त का रक्त ही ऐसा साबुन है जो हमारे जीवन से पापों को धो डालता है।

पानी का ग्लास - सामरी स्त्री से यीशु ने जीवन का जल देने की प्रतिज्ञा की।

आपस में जुड़ी हुई दो छड़ियां - क्रूस।

पेपर पर काटकर बनाई हुई मछली - मछली पकड़ता हुआ पतरस।

पेन्सिल – जीवन की पुस्तक में हमारे नाम लिख लिए गये हैं।

फलों की प्लेट – आत्मा के फल। (गलातियों ५:२२–२३)

चावल की प्लेट –खीस्त के साथ हमारा स्वर्ग में महाभोज (प्रकाशितवाक्य १९:६–१०)

एक लम्बी नुकीली छड़ी – क्रूस पर यीशु की फसली को सिपाही ने बेधा।

हथौड़ा या आरी – नूह ने जहाज बनाने में वर्षो तक समय लगाया।

फूल – परमेश्वर की सुन्दर सृष्टि। उत्पत्ति १

कांटे – मानव पर परमेश्वर का दंड जबकि उसने पहली बार पाप किया। उत्पत्ति ३:१७–१९